एकीकृत कृषि प्रणाली से आत्मनिर्भरता की ओर अंडमान निकोबार

हंसराज सैनी • जागरण

श्री विजय पुरम (अंडमान निकोबार) : कृषि और बागवानी उत्पादों के लिए मुख्यभूमि के राज्यों पर निर्भर रहने वाला अंडमान निकोबार द्वीप समूह अब अपनी किस्मत खुद लिख रहा है। सीमित भूमि, मिट्टी में लवणीयता और अत्यधिक वर्षा जैसी चुनौतियों के बावजूद यहां के किसान अब अभाव से आत्मनिर्भरता की ओर मजबूती से कदम बढ़ा रहे हैं। इस बड़े बदलाव के पीछे मुख्य भूमिका निभा रहा है श्री विजय पुरम स्थित केंद्रीय द्वीपीय कृषि अनुसंधान संस्थान (सीआइएआरआइ)। केंद्र की मोदी सरकार के विकसित भारत 2047 के विजन को धरातल पर उतारते हुए संस्थान का एकीकृत कृषि प्रणाली (आइएफएस) माडल द्वीपों की आर्थिकी का सशक्त आधार बन रहा है।

सीआइएआरआइ ने यहां की छोटी और खंडित जोतों को ध्यान में रखते हुए ऐसा माडल विकसित किया है, जिसमें फसल उत्पादन के साथ-साथ पशुपालन, मत्स्य पालन और बागवानी को एक साथ जोड़ा गया है।

पोषक तत्वों का पुनर्चक्रण, वर्मी कंपोस्ट और सूक्ष्म सिंचाई जैसी तकनीक के माध्यम से संसाधनों का बेहतर उपयोग हो रहा है। मत्स्य पालन की भूमिका को देखते हुए सीआइएआरआइ ने क्षेत्र में कई नवाचार किए हैं। सजावटी मछली पालन और फिश फीड मिल की स्थापना से मछुआरों की आय में वृद्धि हुई है। विशेष रूप से मिनीकाय में फिश एग्रीगेटिंग डिवाइस (एफएडी) की स्थापना मील का पत्थर साबित हुई है, जिससे गहरे समुद्र में मछली पकड़ना आसान और अधिक लाभदायक हो गया है। कार निकोबार में एसटीआइ हब के माध्यम से जनजातीय समुदायों को आधुनिक मत्स्य पालन तकनीकों से जोड़कर उनकी आजीविका को मजबूती दी जा रही है।

अंडमान निकोबार के श्री विजय पुरम स्थित सीआइएआरआइ में आधुनिक तकनीक से तैयार पौधे • जागरण

- द्वीपीय चुनौतियों के बीच धरातल पर दिखने लगा सीआइएआरआइ की पहल का असर
- सीमित जमीन में बहुआयामी खेती, लवणीयता व अधिक वर्षा की चुनौती से पार पाने के प्रयास

चुनौतियों का वैज्ञानिक तोड़

23 जून 1978 को स्थापित संस्थान उष्णकटिबंधीय द्वीपीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए समर्पित देश का एकमात्र राष्ट्रीय केंद्र है। 50 वर्ष में संस्थान ने लवणीयता प्रबंधन और तटीय जलवायु के अनुरूप उन्नत तकनीकों को मानकीकृत कर किसानों को टिकाऊ समाधान दिए हैं। संस्थान ने अब तक 45 उच्च उत्पादक किस्में विकसित की हैं।

अंडमान निकोबार की कृषि तस्वीर

कुल कृषि क्षेत्र : 37,681.79 हेक्टेयर

आर्थिक योगदान : 1393 करोड़ रुपये (12.06 प्रतिशत)

कृषि से जुड़ी आबादी : 27.6 प्रतिशत

प्रमुख फसलें : नारियल (17,902 हेक्टेयर), सुपारी (4757.4 हेक्टेयर), धान (4365.2 हेक्टेयर)।

मसालों और स्वदेशी नस्लों से बढ़ेगी आय

अंडमान के खेतों में मसालों की जल्द महक होगी। मसालों की खेती 312 हेक्टेयर में हो रही है, जिसे 2000 हेक्टेयर तक ले जाने का लक्ष्य है। पशुधन क्षेत्र में भी संस्थान ने टेरेसा बकरी, निकोबारी सुअर और अंडमानी बतख जैसी पांच स्वदेशी नस्लों का पंजीकरण कराया है। संस्थान अब जीनोमिक्स, जैव प्रौद्योगिकी और डिजिटल कृषि पर जोर दे रहा है।

एकीकृत कृषि प्रणाली माडल, मत्स्य पालन में नवाचार और

जलवायु-स्मार्ट तकनीक अंडमान को आत्मनिर्भर बनाने और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को हासिल करने में मील का पत्थर साबित होगी।

-डा. जय सुंदर, निदेशक सीआइएआरआइ श्री विजय पुरम।